International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति – गुरुकुल और विश्वविद्यालय

डॉ. आरती सिंह

वाराणसी

सारांश

प्राचीन भारतीय शिक्षा, सभ्यता एवं संस्कृति के विकास में गुरुकुलों तथा विश्वविद्यालय की भूमिका अवर्णनीय है। गुरुकुल विश्व की सबसे पहली और विस्तृत शिक्षा व्यवस्था है। इसमें विद्यार्थी अपने गुरु के साथ उनके आश्रम में रहकर शिक्षा ग्रहण करते थे। जिसका आरंभ वैदिक काल माना जाता है। गुरुकुल प्रणाली लचीली और नवीन होने के साथ–साथ विद्यार्थियों के सीखने की समग्र क्षमता का विकास करती थी। भारतीय समाज में प्रारंभ से ही ज्ञान और सीखने को महत्व दिया गया है। जिसको गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के माध्यम से निशुल्क और आवासीय शिक्षा व्यवस्था जनमानस के लिए उपलब्ध किया जा सका। समय के साथ यह छोटे–छोटे गुरुकुल नालंदा, विक्रमशिला, तक्षशिला, वल्लभी, काशी आदि जैसे बड़े विश्वविद्यालय के रूप में स्वयं को परिवर्तित कर लिया। यह प्राचीन विश्वविद्यालय न केवल भारतीय उपमहाद्वीप में अपितु चीन, श्रीलंका, तिब्बत, वर्मा, जापान और मध्य एशिया को भी अपने ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित कर रहे थे।

प्राचीन शिक्षा व्यवस्था ने न सिर्फ भारतीय संस्कृति की विरासत को आगे बढ़ाया अपितु उसका मध्य एशिया तक विस्तार भी किया और अपने समृद्धशाली ज्ञान के ज्योति से उसे आलोकित भी किया।

की वर्ड – प्राचीन शिक्षा पद्धति, गुरुकुल, विश्वविद्यालय।

भूमिका–

"प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली जिसने इस सभ्यता को हजारों वर्षों से भी अधिक समय तक सुरक्षित रखा, उनका प्रचार प्रसार किया तथा उसमें संशोधन किया"। शिक्षा को भौतिक तथा आध्यात्मिक उत्थान के लिए आवश्यक माना गया है, जो कि मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों को आलोकित करते हुए उसे सही दिशा निर्देश देता है। प्राचीन भारतीय शिक्षा विश्व के ज्ञान के इतिहास में स्वर्णिम रूप में जाना जाता है। इस समय शिक्षण संस्था के रूप में गुरुकुल की व्यवस्था थी। यह शिक्षा व्यवस्था न केवल ज्ञान अर्जन के लिए थी अपितु यह मनुष्य के सर्वांगीण विकास के साधन थे। इसमें शिक्षार्थी अपने घर से दूर गुरु के निवास स्थान पर रहकर शिक्षा ग्रहण करते थे।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का आरंभ वैदिक युग से हुआ था जब शिक्षा मौखिक रूप में दी जाती थी, जो गुरु शिष्य परंपरा के सहयोग से व्यवस्थित ढंग से कार्य कर रहा था। धीरे–धीरे इन गुरुकुलो ने संस्थागत रूप धारण कर लिया, इनमें से कुछ गुरुकुल व्यवस्थित रूप से विकसित हुई, जो आगे चलकर विश्वविद्यालय के रूप में प्रख्यात हुए। इनकी ख्याति दूर–दूर तक फैल गई और छात्र मध्य एशिया तथा आसपास के पड़ोसी देशों से भी यहाँ शिक्षा ग्रहण करने आने लगे थे। विश्व के अन्य देशों में जब शिक्षा केवल कुछ वर्गों तक सीमित थी, तब भारत में गुरुकुलों मठों और विश्वविद्यालयों के रूप में संगठित और समृद्ध शैक्षणिक परंपरा विकसित हो चुकी थी। प्राचीन शिक्षा प्रणाली में जिन मूल सिद्धांतों की परिकल्पना की गई थी, वह आज भी इस आधुनिक युग में ग्रहण योग्य है। प्राचीन भारत में ज्ञान प्राप्ति के निम्न संस्थाओं का वर्णन मिलता है।

गुरुकुल– इसमें गुरु व शिष्य एक साथ रहते थे और साथ ही अध्ययन–अध्यापन का कार्य भी किया जाता था।

सभा या परिषद– इसमें विशेषज्ञों द्वारा प्राप्त ज्ञान पर चर्चा की जाती थी।

तपस्थली– यह बड़ी सभाएं थी तथा यहां आयोजित प्रवचनों से ज्ञान की प्राप्ति होती थी।

शास्त्रार्थ – एक परंपरा जिसे ज्ञान को परिष्कृत करने में मदद की।

अध्ययन के उद्देश्य – प्राचीन भारतीय शिक्षा का मुख्य उद्देश्य शिक्षार्थियों का समग्र विकास करना। उनमें ज्ञान का संचरण करना, जिससे ज्ञान एक से दूसरी पीढ़ी तक पहुंच सके। चरित्र निर्माण, नैतिक मूल्यों को व्यवहारिक जीवन में उतारना, नागरिक तथा सामाजिक कर्तव्यों का ज्ञान, सामाजिक सुख तथा कौशल की वृद्धि करना संस्कृति का संरक्षण एवं प्रसार करना एवं मनुष्य के बौद्धिक स्तर को आलोचनात्मक चिंतन, व्यावहारिक कौशल एवं आत्म साक्षात्कार की समझ प्रदान करना था। यह उद्देश्य अत्यंत उच्च कोटि के थे, यह न सिर्फ आदर्शवादी थे अपितु कुछ अंश में व्यावहारिक भी थे। वर्तमान समय में भी हमारी शिक्षा व्यवस्था का मुख्य उद्देश्य प्रायः यही है। अतः इस शिक्षा व्यवस्था का गहराई से अध्ययन कर प्राचीन शिक्षा व्यवस्था से वर्तमान परिस्थितियों के अनुरूप ढालने का प्रयास किया जाना चाहिए। जिससे कि वर्तमान समय की शिक्षा समस्याओं जैसे छात्र गुरु संबंध, नैतिक मूल्यों का पतन, असहिष्णुता आदि को रोका जा सके तथा हमारा देश एक बार फिर से विश्व ज्ञान की राजधानी बन सके।

गुरुकुल– गुरुकुल शब्द से तात्पर्य ऐसे शिक्षा संस्थानों से लिया जाता है, जिसमें विद्यार्थी अपने परिवार से दूर गुरु गृह या आश्रम में निवास करते हुए शिक्षा ग्रहण करता था। जिसका शाब्दिक अर्थ गुरु का परिवार या गुरु का कुल होता है। प्रारंभिक भारतीय शिक्षा व्यवस्था में गुरुकुल ही अध्ययन–अध्यापन के प्रधान केंद्र हुआ करते थे। प्रायः गुरुकुल बड़े एवं छोटे सभी प्रकार के होते थे यह भारतीय महाद्वीप की शिक्षा प्रणाली है वेदों के अध्ययन के लिए स्थापित की गयी यह शिक्षा प्रणाली धीरे–धीरे व्यावसायिक, शिल्प कौशल एवं वैज्ञानिक प्रणालियों के उन्नयन पर भी बल दिया गया।

गुरुकुल में ब्रह्मचर्य का पालन करना सभी विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य शर्त था। गुरु की सेवा करना शिष्य का परम धर्म माना जाता था। प्राचीन व्यवस्थाकारों ने गुरु शिष्य के घनिष्ठ संबंधों के महत्व को समझा और पाया कि गुरु के चरित्र और आचरण का शिष्यों के मस्तिष्क पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। परिवार से दूर रहने के कारण छात्रों में आत्मनिर्भरता की भावना प्रबल होती थी। जिससे उनमें निर्णय लेने की तार्किक क्षमता का विकास होता था। गुरुकुल में प्रवेश के लिए परीक्षा बहुत ही कठिन होती थी, जिसमें उत्तीर्ण होने के पश्चात ही उपनयन संस्कार द्वारा आश्रम में प्रवेश दिया जाता था। मनुस्मृति में यह उत्कीर्ण है कि उपनयन संस्कार के पश्चात ही विद्यार्थी का दूसरा जन्म होता है और गायत्री उसकी माता और आचार्य उनके पिता हो जाते हैं–

तत्र यद ब्रह्म जन्मास्य मीजीबंधनचिंहितम।
तत्रास्य माता सावित्री पितात्वाचार्य उच्यते।।

गुरु अपने सभी शिष्यों के साथ समान व्यवहार करते थे। गुरु पत्नी भी शिष्यों पर पुत्रवत स्नेह बनाए रखती थी। गुरुकुल में राजा–प्रजा सभी के बालक एक साथ शिक्षा ग्रहण करते थे एवं सहृदय गुरु के नियमों का अनुशासन में रहते हुए पालन करते थे। जातक कथाओं में उद्दंड विद्यार्थियों के लिए कठोर दंड का भी उल्लेख किया गया है।

गुरुकुल शिक्षा प्राय निःशुल्क होती थी। शिक्षण कार्य करना आचार्य एवं विद्वानों का अनिवार्य कर्तव्य माना गया एवं राज्य तथा समाज का यह कर्तव्य निर्धारित किया गया कि, वह अध्ययन–अध्यापन कार्य करने वाले विद्वानों या गुरुकुलों के निर्वाह के लिए उचित धन की व्यवस्था करें। इस उद्देश्य की पूर्ति करने के लिए शिक्षण संस्थानों को शासन तथा कुलीन वर्ग भूमि तथा धन आदि दान देते थे। समाज का सभी वर्ग शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए यथाशक्ति दान देता था। इसके अतिरिक्त शिक्षा समाप्त होने के पश्चात शिष्य गुरु को गुरु दक्षिणा के रूप में भी कुछ ना कुछ देता था।

गुरुकुलों में शिक्षा मौखिक दी जाती थी, जिसके लिए श्रवण–मनन एवं निदिध्यासन विथिका प्रयोग किया जाता था। वाद–संवाद द्वारा विद्यार्थियों में तार्किक क्षमता का विकास किया जाता था।

प्राचीन शिक्षा पद्धति में आधुनिक युग के तरह परीक्षाएँ एवं उपाधियां नहीं होते थे। गुरुकुल में शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात विद्यार्थियों का समावर्तन संस्कार होता था, जिसमें छात्रों को विद्वतजनों के सामने वाद–संवाद द्वारा उनके ज्ञान को परखा जाता था तत्पश्चात उनका समावर्तन संस्कार होता था और वह अपने घर वापस लौटते थे।

विश्वविद्यालय– प्राचीन भारतीय विश्वविद्यालय न केवल उच्च शिक्षा के केंद्र थे अपितु यह भारत के सांस्कृतिक और आध्यात्मिक उत्थान के आधारशिला भी थे। यह शिक्षा व्यवस्था न केवल ज्ञानार्जन तक सीमित थी अपितु समाज के लिए नीति नियम आचरण की शुद्धता और आध्यात्मिकता से परिपूर्ण ज्ञान प्रदान करने का कार्य भी करते थे। जो उस समय के शिक्षा व्यवस्था के प्रमुख उद्देश्य थे,जिनके माध्यम से छात्रों के संपूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण किया जाता था। इनमें छात्रों को वेद, उपनिषद, व्याकरण, गणित, खगोलशास्त्र, दर्शन, राजनीति, चिकित्सा, तर्कशास्त्र, संगीत, नृत्य और युद्ध कला जैसे विषयों का अध्ययन अध्यापन कार्य कराया जाता था। प्रमुख प्राचीन भारतीय विश्वविद्यालय निम्नलिखित है –

नालंदा विश्वविद्यालय– प्राचीन भारतीय विश्वविद्यालयों में नालंदा विश्वविद्यालय अत्यधिक लोकप्रिय था। यह विश्व के प्राचीनतम आवासीय विश्वविद्यालयों में से एक था, जिसकी स्थापना गुप्त शासक (कुमार गुप्त) ने बिहार राज्य के राजगीर के निकट नालंदा में किया और यह विश्वविद्यालय अपने चरमोत्कर्ष पर हर्षवर्धन के शासनकाल में पहुँचा। यह विश्वविद्यालय बौद्ध धर्म के महायान शाखा के शिक्षा का प्रमुख केंद्र था तथा यहाँ अन्य विषयों का भी समुचित रूप से शिक्षण कार्य होता था। चीनी यात्री ह्वेनसांग तथा इत्सिंग ने भी यहाँ अध्ययन किया था। उस समय पर विश्वविद्यालय के कुलपति शीलभद्र थे, जो सभी विषयों के प्रकांड पंडित थे, विश्वविद्यालय का शिक्षण कार्य अत्यंत उत्कृष्ट कोटि का था एवं इसमें एक विशाल पुस्तकालय (रत्नसागर) जिसमें हस्तलिखित हजारों पांडुलिपियाँ एवं ग्रंथ संग्रहित थी। इसमें शिक्षा ग्रहण करने के लिए न केवल भारत के कोने–कोने से अपितु चीन, कोरिया, तिब्बत, मंगोलिया और मध्य एशिया से विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते थे। छात्रों की संख्या **10000** के आसपास तथा लगभग **1000** शिक्षकों का उल्लेख मिलता है।

विक्रमशिला विश्वविद्यालय– पाल शासक (धर्मपाल) ने इसकी स्थापना बिहार (भागलपुर) में कराया। यह लगभग चार शताब्दियों से भी अधिक समय तक अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय बना रहा। इसमें 6 महाविद्यालय थे, जिसमें प्रत्येक में एक केंद्रीय कक्ष तथा 108 अध्यापक थे। विश्वविद्यालय में व्याकरण, तर्कशास्त्र, मीमांसा, तंत्र विद्या, विधिवाद जैसे विशेष विषयों का अध्ययन अध्यापन एवं बौद्ध धर्म के वज्रयान शाखा का अध्ययन विशेष रूप से किया जाता था। कालांतर में इसकी प्रशासनिक परिषद ही नालंदा विश्वविद्यालय का भी देखरेख करने लगी। यहाँ के स्नातकों को अध्ययनोपरांत पाल शासकों द्वारा उपाधियाँ प्रदान की जाती थी।

तक्षशिला विश्वविद्यालय – यह (पाकिस्तान के रावलपिंडी के निकट) भारतीय उपमहाद्वीप का सबसे प्राचीन विश्वविद्यालय माना जाता है। यहाँ पर पाणिनि कौटिल्य एवं चरक जैसे विद्वानों ने शिक्षा ग्रहण किया था। यह ब्राह्मण शिक्षा का प्रमुख केंद्र माना जाता था, इसमें वेद, व्याकरण, तर्कशास्त्र, चिकित्सा, खगोल शास्त्र, गणित शास्त्र, राजनीति, अर्थशास्त्र युद्ध कला आदि जैसे विषयों का पठन–पाठन कार्य किया जाता था।

वल्लभी – इसकी स्थापना गुजरात के काठियावाड़ में मैत्रक वंशी शासको ने किया था। यह पश्चिम भारत में शिक्षा तथा संस्कृति का प्रसिद्ध केंद्र था। यह अपने साहिष्णुता और बौद्धिक स्वतंत्रता के लिए अधिक प्रख्यात था। हीनयान शाखा के साथ–साथ यहाँ न्याय, विधि, वार्ता, साहित्य आदि विषयों के उच्च शिक्षा की व्यवस्था थी।

उपरोक्त वर्णित विश्वविद्यालयों के अतिरिक्त भी और कई उच्च शिक्षा केंद्र प्रसिद्ध थे जैसे उदंत पुरी, सोमपुरी, जगददला, काशी, ताम्रलिप्ति, उज्जैन इत्यादि प्रमुख थे।

प्राचीन भारतीय शिक्षा केंद्रों (गुरुकुल और विश्वविद्यालय) ने भारत के अतिरिक्त अन्य कई देशों के विद्यार्थियों को भी ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित किया जिसने भारतीय संस्कृति के विरासत को सुरक्षित एवं संरक्षित करते हुए उसे और भी अधिक समृद्धिशाली एवं गौरवशाली बनाया जिसके कारण यह शिक्षा पद्धति वर्तमान में भी समान रूप से अनुकरणीय एवं एक आदर्श प्रस्तुत करती है। जहाँ एक तरफ गुरुकुल को प्राथमिक शिक्षा एवं वेदों की शिक्षा के केंद्र के रूप में तथा विश्वविद्यालय को उच्च शिक्षा के लौकिक तथा अलौकिक विषयों के अध्ययन के केंद्र के रूप में अपनी पहचान बनाये हुए थे।

सन्दर्भ –

1. सिंह, वी0बी0 एवं आहुजा, सुधा (2008), भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास, आर0 लाल, बुक डिपो, मेरठ।
2. मिश्र, डॉ0 डी0सी, भारत में शैक्षिक पद्धति का विकास।
3. पाल, डॉ0 कुलविन्दर, शैक्षिक व्यवस्था का विकास।
4. श्रीवास्तव के0सी0, प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, यूनाइटेड बुक डिपो।
5. अल्टेकर ए0एस0, एजुकेशन इन एसिएंट इंडिया, ज्ञान बुक्स।
6. पराशर, डॉ0 मधु और सिंह, दीपा, भारतीय शिक्षा का इतिहास, एस0बी0पी0डी0 पब्लिकेशन।
7. गुप्ता, डॉ0 एस0पी0, गुप्ता, डॉ0 अलका (2021), भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।